JESUS REDEEMS MINISTRIES

युवा जीवन

अक्टूबर 2025

तुम अपने नगर का पहरेदार हो। इसलिए आत्मा में प्रज्वलित हो।

प्रज्वलित रहें

प्रस्तावना

मेरे प्रिय युवा मित्रों,
यीशु मसीह के नाम पर हार्दिक अभिनन्दन!

आप परमेश्वर की दृष्टि में अत्यंत मूल्यवान हैं, और वह आपसे असीम प्रेम करते हैं। जब मैं युवाओं को प्रभु की सेवा के लिए जोश से भरते हुए देखता हूँ, तो मेरा हृदय स्तुति से भर जाता है।

फिर भी, जैसा कि पौलुस ने कहा है, **"प्रयत्न करने में आलसी न हो, आत्मिक उन्माद में भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो" (रोमियों 12:11)**, आपको प्रभु के लिए जोश से जलते हुए, आत्मा में उत्साही बने रहना चाहिए।

हाल ही में, मैंने तमिलनाडु के विभिन्न जिलों में युवाओं की सेनाएँ उभरती देखी हैं। एलिय्याह और दानिय्येल की तरह, कई लोगों ने स्वयं को पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित कर दिया है, और अटूट प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ रहे हैं। यह परमेश्वर द्वारा अपने वादे को पूरा करने से कम नहीं है—अपनी महिमा के लिए एक नई पीढ़ी को तैयार करना और उसका उपयोग करना।

प्रिय मित्रों, उठो! सतर्क रहो। अनुशासन और दृढ़ता के साथ अपने विश्वास की दौड़ दौड़ो। कई लोग जिन्होंने आत्मा में शुरुआत की, दुर्भाग्य से, देह में समाप्त हो गए। लेकिन आपको इसके लिए नहीं बुलाया गया है। अंत समय के युवाओं के रूप में, आपको एलिय्याह की आत्मा धारण करने के लिए चुना गया है—जो उग्र, निडर और अडिग है।

"इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ, इन वर्षों में मेरे बिना कहे न तो ओस पड़ेगी और न वर्षा होगी।" (1 राजा 17:1)

एलिय्याह, परमेश्वर की सामर्थ से प्रज्वलित होकर, राजा अहाब के सामने इस चुनौती के साथ निडरता से खड़ा हुआ। वही उग्र आत्मा आज परमेश्वर आपमें भी प्रज्वलित करना चाहता है। एलिय्याह की सेवकाई ने एक विद्रोही राष्ट्र को परमेश्वर की ओर वापस मोड़ दिया। स्वर्ग से आग बरसाकर, उसने इस्राएलियों को पश्चाताप में मुँह के बल गिरकर यह पुकारने के लिए प्रेरित किया: "प्रभु—वह परमेश्वर है!"

इस पीढ़ी में हमें इसी प्रकार की सुसमाचार सेवकाई की आवश्यकता है—जो मसीह के सत्य को न केवल शब्दों से, **बल्कि चिन्हों, आश्चर्य-कर्मों और चमत्कारों** से भी प्रदर्शित करे।

परमेश्वर द्वारा आपको इस सामर्थी तरीके से उपयोग करने के लिए, आपको **आत्मा में प्रज्वलित** रहना होगा। तभी आपका जीवन एक जीवित गवाही के रूप में जलेगा, यह सिद्ध करते हुए कि केवल यीशु ही प्रभु हैं।

"परमेश्वर अपने राज्य के लिए अंतिम समय के एलिय्याहों को खड़ा कर रहा है—जो प्रज्वलित, अडिग और सामर्थी हैं।"

प्रभु आपको प्रज्वलित करें और आपको अपने अंतिम समय के एलिय्याह पीढ़ी के हिस्से के रूप में खड़ा करें!

मसीह के मिशन में
मोहन सी लाजर

400 अस्वीकृतियाँ। एक लक्ष्य। शुन्य त्याग!

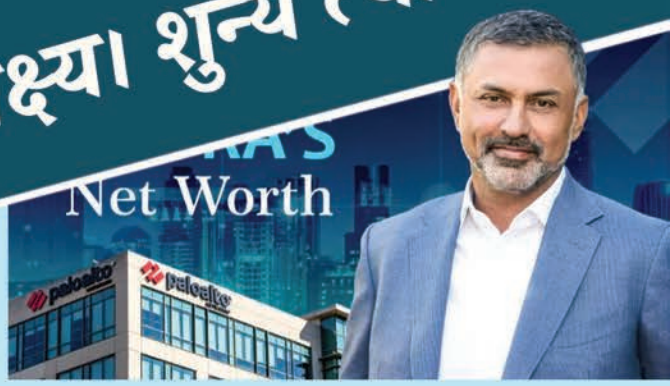

प्रिय युवा उपलब्धि प्राप्तकर्ताओं, आपका हार्दिक अभिनन्दन! चाहे पढ़ाई हो, खेल हो या करियर, हम सभी का एक ही सपना होता है - सफल होना और आगे बढ़ना। लेकिन जब असफलता मिलती है या अस्वीकृति ज़ोरदार आघात पहुँचाती है, तो सफलता की वह आग अक्सर बुझ सी जाती है। अगर आप इसे पढ़ रहे हैं और उसी स्थिति में अटके हुए महसूस कर रहे हैं, तो यह कहानी आपके लिए है।

छोटे शहर के लड़के से वैश्विक सीईओ तक

उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद शहर में, किसी ने सोचा भी नहीं था कि **निकेश अरोड़ा** नाम का एक युवा एक दिन **दुनिया के सबसे ज़्यादा वेतन पाने वाले अधिकारियों में से एक बन जाएगा।**

एक वायुसेना अधिकारी के बेटे के रूप में सख्त अनुशासन में पले-बढ़े, निकेश ने पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और आईआईटी-बीएचयू से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की। बड़े सपनों का पीछा करने के लिए दृढ़ संकल्पित, वह एमबीए और वित्त में उन्नत अध्ययन पूरा करने के लिए अमेरिका चले गए।

हम में से अधिकांश लोगों की तरह, उन्हें भी एक आसान चढ़ाई की उम्मीद थी - कड़ी मेहनत से पढ़ाई करें, एक अच्छी नौकरी पाएँ, और तेज़ी से आगे बढ़ें। लेकिन हकीकत ने उन्हें कड़ी टक्कर दी। **उनके नौकरी के आवेदन 400 बार खारिज किए गए।**

जब अस्वीकृति उनके प्रशिक्षण का आधार बनी

ज़्यादातर लोग नौकरी छोड़ देते। निकेश ने ऐसा नहीं किया। अस्वीकृति को एक अंत समझने के बजाय, उन्होंने इसे **महानता के प्रशिक्षण** के रूप में देखा।

आखिरकार, उनकी लगन रंग लाई - वे फिडेलिटी इन्वेस्टमेंट्स में उपाध्यक्ष बन गए। गूगल ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें EMEA संचालन का प्रमुख बनाया, बाद में उन्हें **मुख्य व्यवसाय अधिकारी** के पद पर पदोन्नत किया।

इसके तुरंत बाद, सॉफ्टबैंक समूह ने उन्हें **अध्यक्ष और सीईओ** नियुक्त किया। और 2018 में, उन्होंने **पालो ऑल्टो नेटवर्क्स** के सीईओ और अध्यक्ष का पदभार संभाला, और तकनीकी उद्योग में एक शीर्ष नेता के रूप में वैश्विक पहचान बनाई। 2023 तक, उनका वार्षिक वेतन **15.14 करोड़ डॉलर** तक पहुँच गया, जिससे वे **संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे अधिक वेतन पाने वाले सीईओ** में शामिल हो गए।

असफलता अंतिम रेखा नहीं है - यह ईंधन है

मित्रों, निष्कर्ष यह है: 400 अस्वीकृतियों ने उन्हें नहीं रोका - उन्होंने उन्हें आकार दिया।

निकेश अरोड़ा बार-बार उठते रहे, असफलता को अपने भविष्य को परिभाषित करने से मना करते रहे।

अस्वीकृति अंत नहीं है। यह एक कक्षा है जहाँ सफलता आपको पहला सबक देती है। अगर आप इसे इस नज़रिए से देखें, तो जीत न सिर्फ़ मुमकिन है, बल्कि अपरिहार्य भी है।

इसलिए उठो, खुद पर से धूल झाड़ो, और अपने सपने की ओर दौड़ते रहो। क्योंकि असली असफलता तो बस हार मान लेना है।

यीशु, मेरे बड़े भाई

एक उजली सुबह, हम एरल तालुका के एक छोटे से गाँव में सिस्टर ग्रेसलिन के घर गए। गाँव वालों ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया और हमें सीधे उनके घर ले गए। गाँव के हार्दिक आतिथ्य की परंपरा का पालन करते हुए, ग्रेसलिन और उनके परिवार ने बड़े गिलासों में परोसी गई कॉफ़ी के गरमागरम प्यालों से हमारा स्वागत किया, उनके चेहरे खुशी से चमक रहे थे। उस गर्मजोशी और प्यार से घिरे हुए, हम एक प्रेरक साक्षात्कार रिकॉर्ड करने बैठ गए। अब हम यह बातचीत आपके साथ साझा कर रहे हैं, उम्मीद है कि यह आपके विश्वास को मज़बूत करेगी। अगर प्रभु इस गवाही के माध्यम से आपको छूते हैं, तो हमें बताना न भूलें!

हमें अपने और अपने परिवार के बारे में बताएँ।

मेरा जन्म और पालन-पोषण थूथुकुडी जिले के एरल तालुका के एक छोटे से गाँव में हुआ। हालाँकि मैं एक मसीही परिवार में पली-बढ़ी, मैं केवल नाम की मसीही थी। मैंने 2019 में अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की, लेकिन तब तक, मेरा यीशु के साथ कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं था। मैं अपनी मर्ज़ी से जीती थी, परमेश्वर की परवाह किए बिना। मेरी एक बड़ी बहन है और मैं अपने माता-पिता के साथ रहती हूँ। हालाँकि मुझे अपनी बहन का प्रेम अच्छा लगता था, पर मैं हमेशा एक भाई की चाहत रखती थी। भाईचारे की भावना मुझे बहुत प्रिय थी, इसलिए मैं अपने चचेरे भाइयों से बहुत प्रेम करती थी,

मुझे अब संसार के प्रेम की आवश्यकता नहीं है, यीशु ही मेरे लिए पर्याप्त है!

मुझे विश्वास था कि वे हमेशा मेरे अपने भाइयों की तरह मेरे साथ खड़े रहेंगे। लेकिन हायर सेकेंडरी (+2) की पढ़ाई पूरी करने के बाद, यह भरोसा टूट गया। जिनसे मैं प्रेम करती थी, उनके शब्दों ने मेरा हृदय तोड़ दिया। तभी मुझे एहसास हुआ कि इंसानी प्रेम नाज़ुक और अस्थायी होता है।

जिन्हें तुमने भाई समझकर प्रेम किया, उन्होंने तुम्हें बहुत दुख पहुँचाया। क्या तुम्हें कोई ऐसा रिश्ता मिला जिसने इस ज़ख्म को भर दिया?

हाँ। जब मैं उस दर्द से टूट गई, तो मैं प्रभु के पास गई और रोई: "प्रभु, जिन्हें मैंने भाई समझकर प्रेम किया, उन्होंने मुझे दुख पहुँचाया है।" मैंने रोते हुए स्वीकार किया, "यीशु, यह सारा संसार एक भ्रम है। लोग सिर्फ़ अपने फ़ायदे के लिए प्रेम करते हैं। लेकिन मैं तुम्हें भूल गई—वह जो सच्चा प्रेम देता है। मुझे अब सांसारिक प्रेम की ज़रूरत नहीं है; सिर्फ़ तुम ही मेरे लिए काफ़ी हो।"

जब मैंने प्रार्थना की, तो यीशु ने मुझे धीरे से मेरे पापों की याद दिलाई और मुझे उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। मैं रोयी, "प्रभु, मैंने इतने साल बर्बाद कर दिए हैं। मैंने पाप किए हैं और आपको दुःख पहुँचाया है।" मैंने पूरी तरह से समर्पण कर दिया, अपने सभी पापों को स्वीकार किया, और 19 मई, 2019 को, मैंने यीशु को अपना निजी उद्धारकर्ता स्वीकार किया और अपना जीवन पूरी तरह से उन्हें समर्पित कर दिया। उसी दिन मेरा उद्धार हुआ। उस क्षण से, यीशु मेरे बड़े भाई बन गए, और कदम-दर-कदम मेरा मार्गदर्शन करते रहे।

बहुत बढ़िया! यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करने के बाद, उनके साथ आपका रिश्ता कैसे गहरा हुआ?

तब तक, मेरी प्रार्थना का समय सिर्फ़ पाँच मिनट का होता था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मुझे अपने देश के लिए, नाश हो रही आत्माओं के लिए, या पुनरुत्थान के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। फिर लॉकडाउन आ गया। "आइए प्रार्थना करें" कार्यक्रम के माध्यम से, मैंने सीखा कि कैसे और क्यों प्रार्थना करनी चाहिए। मेरा प्रार्थना जीवन लंबा और गहरा होता गया।

मुझे पवित्र आत्मा का अभिषेक पाने की भी लालसा थी, इसलिए मैंने इसके लिए सच्चे मन से प्रार्थना की। अपने उद्धार के बाद, मैंने बाइबल पढ़ना और उस पर मनन करना शुरू किया। परमेश्वर का वचन मुझे दिन-प्रतिदिन गढ़ता गया, कुम्हार के हाथों में मिट्टी की तरह आकार देता गया। जैसे-जैसे मैं पढ़ती गयी, मैंने सीखा कि मुझे कैसे जीना चाहिए और कैसे नहीं। वचन के प्रति मेरा प्रेम बढ़ता गया। जब भी मैं बोझिल महसूस करती, बाइबल ही मेरे आँसू पोंछती और मेरे कदमों का मार्गदर्शन करती। वचन के माध्यम से, मैं प्रभु की भलाई का अनुभव करने और उसे अनुभव करने लगी।

यह अद्भुत है—आपने प्रार्थना करना और परमेश्वर के वचन में आनंदित होना सीखा। क्या आपको वह अभिषेक प्राप्त हुआ जिसकी आप लालसा रखते थे?

हाँ! इग्नाइटर्स कैंप में, प्रभु ने मेरा अभिषेक किया। उन्होंने मुझे अन्य भाषाओं के वरदान, आध्यात्मिक युद्ध के लिए अभिषेक, और सुसमाचार बाँटने की सामर्थ से भर दिया। महामारी के दौरान, मैंने यीशु के साथ काफ़ी समय बिताया। उन पलों ने मुझे बहुत ख़ुशी दी, क्योंकि मैंने परमेश्वर से बात करने और उन्हें मुझसे बात करते हुए सुनने की वास्तविकता का अनुभव किया। यीशु को स्वीकार करने के बाद से, मेरा पापी स्वभाव बदल गया है। उन्होंने मुझे एक नई रचना में बदल दिया।

अद्भुत! कक्षा 12 के बाद, क्या आप अपनी पढ़ाई जारी रख पाए?

शुरुआत में, मैंने NEET की परीक्षा की तैयारी करने की कोशिश की, लेकिन मैं सफल नहीं हुई। फिर मैंने नर्सिंग के बारे में सोचा, लेकिन फीस बहुत ज़्यादा थी। मैंने मन ही मन प्रार्थना की कि कौन सा कोर्स करूँ। अगस्त आते-आते मुझे डर लगने लगा कि मेरा पूरा साल बर्बाद हो जाएगा। जब मैंने पास के एक कॉलेज में बीएससी गणित के बारे में पूछताछ की, तो वहाँ दाखिले बंद हो चुके थे। फिर उन्होंने बताया कि इंजीनियरिंग में अभी भी दो सीटें खाली हैं। लेकिन फीस ₹30,000 सालाना थी, साथ में बस का किराया भी। चूँकि मेरे पिता हमारे परिवार के इकलौते कमाने वाले सदस्य थे, इसलिए हम इतना खर्च नहीं उठा सकते थे।

मैं चिल्लाई, "हे परमेश्वर, हम इतनी फीस कैसे भर पाएँगे?" मैं ठीक से प्रार्थना भी नहीं कर रही थी; मैं बस अपना डर उनके सामने उड़ेल रही थी। उसी समय, कॉलेज ने मुझे बुलाया। उन्होंने कहा, "चूँकि आपके 500 से ज़्यादा अंक आए हैं, इसलिए आपको कोई ट्यूशन फीस नहीं देनी है—सिर्फ़ बस की फीस। कृपया तुरंत आकर अपना दाखिला पक्का कर लें।" मेरी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा! जब मैं दाखिले के लिए गई, तो प्रिंसिपल ने मेरी मार्कशीट देखी, लेकिन कुछ नहीं कहा। फिर भी, इससे पहले कि मैं यीशु को अपनी समस्या बता पाता, उसने पहले ही उत्तर दे दिया था—मेरे लिए उससे कहीं ज़्यादा किया जो एक भाई भी नहीं कर सकता था।

हालेलुया! क्या चमत्कार है! उसके बाद तुम्हारी पढ़ाई कैसी रही?

चूँकि मैं तमिल माध्यम से आई हूँ, इसलिए अंग्रेज़ी में इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू में बड़ी मुश्किल लगी। लेकिन जब मैंने बुद्धि के लिए प्रार्थना की, तो प्रभु ने मुझे वही बुद्धि देने का वादा किया जो उन्होंने सुलैमान को दी थी। और उन्होंने दी भी!

परमेश्वर ने मुझे कई पदक और शील्ड जीतने में मदद की। मैंने अपने विभाग में दूसरा स्थान हासिल किया। अपने अंतिम सेमेस्टर में, मुझे अपने प्रोजेक्ट के लिए टीम लीडर चुना गया। मुझे समझ नहीं

एक बार मैं असफल था। लेकिन जब मैंने परमेश्वर का साथ दिया, तो उसने मुझे ऊपर उठाया और मुझे लगातार जीत दिलाई!

आ रहा था कि क्या करूँ, लेकिन जब मैंने प्रार्थना की, तो प्रभु ने अद्भुत मार्गदर्शन दिया और मुझे सर्वश्रेष्ठ पेपर प्रस्तुति का पुरस्कार दिलाया।

एक बार मैं असफल रही। लेकिन जब मैंने प्रभु पर भरोसा रखा, तो प्रभु ने मुझे ऊपर उठाया और मुझे लगातार जीत दिलाई।

अद्भुत! परमेश्वर ने आपकी पढ़ाई में आपको बहुत आशीषें दीं है। बदले में, आपने उनके लिए क्या किया?

इग्नाइटर्स कैंप में, मुझे सिखाया गया था कि हर विश्वासी को प्रभु की सेवा करनी चाहिए। वहाँ, परमेश्वर ने मुझे सुसमाचार प्रचार के अभिषेक से भी अभिषिक्त किया। मोहन अंकल ने हमें प्रोत्साहित करते हुए कहा कि पढ़ाई करते हुए भी हम परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं। सुसमाचार बाँटना मेरे लिए बोझिल था, लेकिन मैं आध्यात्मिक युद्ध और सुसमाचार प्रचार, दोनों से ही भयभीत थी।

प्रभु ने मुझे धैर्यपूर्वक प्रशिक्षित किया। चूँकि मैं सीधे जाकर सुसमाचार बाँटने में झिझक रही थी, इसलिए परमेश्वर ने मेरे मोबाइल फ़ोन का इस्तेमाल किया। हर सुबह, मेरी निजी प्रार्थना के दौरान, वह मुझे एक वचन देते थे। मैं इसे अपने व्हाट्सएप स्टेटस पर पोस्ट करती थी और प्रार्थना करती थी: "प्रभु यीशु, इस वचन के माध्यम से कम से कम एक आत्मा का उद्धार हो।"

परिणामस्वरूप, मेरे तमिल शिक्षक ने ये शब्द पढ़े और यीशु को स्वीकार किया। मेरे अन्यजाती मित्रों ने भी कहा, "यह वचन मुझसे बात करता है।" इस तरह, मैंने सुसमाचार बाँटना शुरू किया। बाद में, मैं दूसरों के साथ मिलकर एक समूह के रूप में सुसमाचार प्रचार करने लगी।

इस वजह से, परमेश्वर ने न केवल मेरे आध्यात्मिक जीवन को, बल्कि मेरे सांसारिक जीवन को भी कई तरह से आशीष दिया।

अंत में, युवाओं के लिए आपका क्या संदेश है?

प्रिय युवाओं, सभी से प्रेम करो, लेकिन लोगों पर भरोसा मत करो। केवल यीशु ही तुम्हारे पूर्ण विश्वास के योग्य हैं। माता-पिता और मित्र शायद हमेशा आपके साथ न रहें, लेकिन प्रभु आपके पिता, आपकी माता, आपके मित्र—आपके सब कुछ होंगे।

चाहे आपका पाप कुछ भी हो, अगर आप यीशु के पास आते हैं, तो वह आपको शुद्ध करेंगे। हर

यीशु ने न केवल मेरे आध्यात्मिक जीवन को बल्कि मेरे सांसारिक जीवन को भी कई तरह से आशीर्वाद दिया है।

मामले में, सबसे पहले प्रार्थना में उनसे बात करें। बाइबल से प्रेम करें। इसे पढ़ना कभी बंद न करें, क्योंकि वचन आपको सही मार्ग पर ले जाएगा।

प्रिय युवाओं, बहुत से लोग यीशु को अपना पिता या माता मानते हैं। लेकिन बहन ग्रेसलिन ने अनोखे ढंग से उन्हें अपने बड़े भाई के रूप में अपनाया। शायद आपको

भी लगता हो कि आपके जीवन में किसी रिश्ते की कमी है। निराश न हों। यीशु आपके भाई होंगे, हर तरह से आपकी मदद करेंगे। उन्हें हमेशा अपने सामने रखें। जब वह आपके दाहिने हाथ में होंगे, तो आप कभी नहीं डगमगाएँगे।

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 30/11/2025 और 06/03/2026 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा।कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।

Revival IGNITERS

संपर्क संख्या : +919750955548

YouTube Jesus Redeems - Hindi

Comforter DIGITAL CHANNEL www.comfortertv.com

युवा जीवन

यीशु उद्धार करता है युवा तंबू के माध्यम से "युवा जीवन" नामक मासिक पत्रिका तमिल, अंग्रेज़ी, हिंदी, मलयालम, तेलुगू, कन्नड़ और बांग्ला भाषाओं में प्रकाशित की जा रही है।

हर महीने प्रकाशित होने वाली युवा जीवन पत्रिका को आप प्राप्त करना चाहते हैं तो किस भाषा में चाहिए, उस भाषा के सामने टिक करके उस भाग का फोटो लेकर अपनी स्पष्ट पता विवरण के साथ हमें व्हाट्सऐप करें।

+91 9750955548 youth@jesuredeems.org

समाचार

भारत में एक-तिहाई मौतें हृदय रोग के कारण: अध्ययन रिपोर्ट जारी

एक चौंकाने वाले अध्ययन से पता चला है कि भारत में हर तीन में से एक मौत हृदय संबंधी बीमारियों के कारण होती है। भारत के रजिस्ट्रार जनरल ने 2021 और 2023 के बीच देश भर में मृत्यु के कारणों का विश्लेषण करते हुए एक रिपोर्ट प्रकाशित की है।

निष्कर्षों के अनुसार, 56.7% मौतें गैर-संचारी रोगों के कारण हुईं। वहीं, 23.4% मौतें संचारी रोगों, मातृ एवं नवजात शिशु संबंधी जटिलताओं और पोषण संबंधी कमियों से जुड़ी थीं।

चिंताजनक रूप से, 31% मौतें हृदय संबंधी स्थितियों के कारण हुईं। इसके बाद, श्वसन संक्रमण से 9.3%, ट्यूमर से 6.4%, अन्य श्वसन जटिलताओं से 5.7%, पाचन विकारों से 5.3%, बुखार से 4.9%, सड़क दुर्घटनाओं और चोटों से 3.7%, मधुमेह से 3.5% और जननांग रोगों से 3% मौतें हुईं। इसके अतिरिक्त, 10.5% मौतों को बिना किसी स्पष्ट कारण के वर्गीकृत किया गया।

15 से 29 वर्ष की आयु के व्यक्तियों में, आत्महत्या और आत्महत्या को मृत्यु के सबसे सामान्य कारण बताया गया। इसके विपरीत, 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों में अस्पष्टीकृत मौतें मुख्य रूप से देखी गईं।

- *(स्रोत: दिनाकरन, 6 सितंबर)*

गाज़ा में बच्चों की पीड़ा: संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि 21,000 बच्चों ने अपनी प्राकृतिक क्षमताएँ खो दी हैं

विकलांग व्यक्तियों के लिए संयुक्त राष्ट्र एजेंसी के अनुसार, लगातार इज़राइली हमलों के कारण, गाज़ा में लगभग 21,000 बच्चे अपनी बुनियादी क्षमताएँ खो चुके हैं और विकलांग हो गए हैं।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि संघर्ष के दौरान लगभग 40,500 बच्चे घायल हुए हैं, जिनमें से लगभग आधे ने सुनने, बोलने या देखने जैसी महत्वपूर्ण कार्यक्षमताएँ खो दी हैं।

गाज़ा में बच्चे गंभीर कुपोषण से भी पीड़ित हैं। एकीकृत खाद्य सुरक्षा चरण वर्गीकरण प्रणाली के अनुसार, यदि वर्तमान स्थिति जारी रहती है, तो जून 2026 तक लगभग 132,000 बच्चों की मृत्यु का खतरा मंडरा रहा है।

क्षेत्र के स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, संघर्ष शुरू होने के बाद से अब तक 63,700 से ज़्यादा लोग मारे जा चुके हैं और 161,000 से ज़्यादा घायल हुए हैं।

- *(स्रोत: दिनाकरन, 4 सितंबर)*

उठ और प्रकाशमान हो!

इस महीने, परमेश्वर आपसे व्यक्तिगत रूप से बात करते हैं:"मेरे पुत्र, मेरी पुत्री - तुम्हारा प्रकाश आ गया है! मैंने तुम्हें अपनी चमक दी है। अब उठो और प्रकाशमान हो!"यह सिर्फ़ एक वादा नहीं है। यह एक आज्ञा है।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनमोल नाम में हार्दिक अभिनन्दन!

अन्धकार से ढका हुआ संसार

हम मुश्किल दौर में जी रहे हैं। हर दिन मौत, युद्ध, अकाल, बीमारी और हिंसा की नई सुर्खियाँ लेकर आता है। ऐसा लगता है जैसे पृथ्वी के हर कोने में बुराई फैल गई है। बाइबल कहती है कि शैतान जानता है कि उसका समय कम है (**प्रकाशितवाक्य 12:12**), और वह विनाशकारी क्रोध के साथ मानवता पर भड़क रहा है।

लेकिन अंधकार को केवल ज्योति से ही हराया जा सकता है। इसीलिए यीशु ने घोषणा की, **"जब तक मैं जगत में हूँ, तब तक जगत की ज्योति हूँ" (यूहन्ना 9:5)**। वह मृत्यु की छाया को दूर भगाने आए थे—और यदि आप उन्हें ज्योति के रूप में स्वीकार करते हैं, तो वे आपके जीवन को अंधकार से उज्ज्वल प्रकाश में बदल देंगे। इससे भी बढ़कर, **वह प्रकाश आपके माध्यम से दूसरों तक चमकना चाहिए।**

अच्छे कर्मों का प्रकाश

यीशु ने कहा, **"तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने चमके, कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें" (मत्ती 5:16)**।

आप जहाँ भी रहते हैं, काम करते हैं, अध्ययन करते हैं, या सेवा करते हैं, लोगों को आपकी दयालुता, निष्ठा और करुणा दिखनी चाहिए। अच्छे कर्म प्रकाश की किरणें हैं जो अंधकार

को पीछे धकेलती हैं। ये आपकी महिमा के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर की महिमा के लिए हैं। जब आप इस तरह जीते हैं, तो आपके आस-पास का वातावरण ही बदल जाता है—परछाइयाँ गायब हो जाती हैं, और परमेश्वर की उपस्थिति आपके आस-पास भर जाती है।

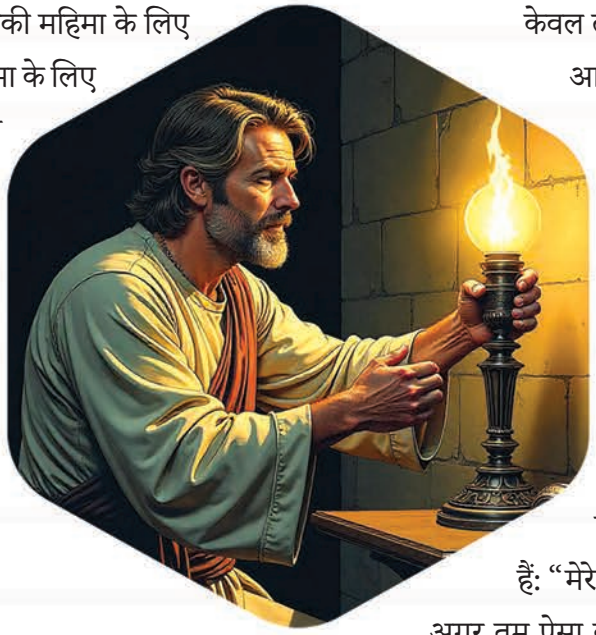

पवित्र आत्मा का प्रकाश

एक दीपक सिर्फ़ इसलिए नहीं जलता क्योंकि वह साफ़ है। उसे तेल की ज़रूरत होती है। इसी तरह, इस दुनिया में चमकने के लिए, आपको पवित्र आत्मा के अभिषेक की ज़रूरत है।

दैनिक प्रार्थना ही कुंजी है। हर सुबह, जल्दी उठें, परमेश्वर को खोजें, और उसे अपनी आत्मा से आपको नए सिरे से भरने दें। जैसे तेल दीपक में भरता है, वैसे ही सामर्थ और पवित्रता आपके जीवन में भर जाएगी। जल्द ही, लोग इस चमक को देखेंगे—आपके चेहरे में, आपके शब्दों में और आपके कार्यों में। अगर आपको अभी तक पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला है, तो उसकी इच्छा करें, उसके लिए प्रार्थना करें, और परमेश्वर उसे ज़रूर उँडेलेंगे।

अपना प्रकाश ना छिपाएँ

यीशु ने कहा, **"कोई भी दीपक जलाकर उसे कटोरे के नीचे नहीं छिपाता। बल्कि उसे दीवट पर रखता है ताकि अंदर आने वाले प्रकाश को देख सकें"** (लूका 11:33)।

केवल लौ का होना ही पर्याप्त नहीं है; आपको इसे साहसपूर्वक चमकने देना चाहिए। व्यक्तिगत कमज़ोरियों या पिछली असफलताओं को अपने प्रकाश को मंद न होने दें। इसे ऊँचा रखें जहाँ सब देख सकें—और अंधकार को भागते हुए देखें।

परमेश्वर आज आपसे कहते हैं: "मेरे पुत्र, उठ और प्रकाशमान हो! अगर तुम ऐसा करोगे, तो तुम्हारे घर, तुम्हारी गली, तुम्हारे शहर का अंधकार मिट जाएगा। तुम्हारे विरुद्ध शत्रु का हर प्रयास नष्ट हो जाएगा।"

अपने हृदय की जाँच का समय!

प्रिय युवा मित्र, क्या यीशु का प्रकाश आपके जीवन में प्रवेश कर चुका है? अगर हाँ, तो क्या अब भी कोई "धुआँ" है—पाप, समझौता, या भटकाव—जो आपकी चमक को धुंधला कर रहा है? उसे साफ़ कर दीजिए। पवित्र आत्मा को आपको शुद्ध और सशक्त बनाने दीजिए। फिर आपको मसीह के लिए उठने और प्रकाशमान होने से कोई नहीं रोक सकता।

गलत राह में खो गया

मेरी उम्र 28 साल है। मैंने पहली बार अपने मित्रों के साथ, ग्यारहवीं कक्षा में, अपने परिवार या स्कूल के जाने बिना,तंबाकू चबाना शुरू किया था। बाद में, कॉलेज के दौरान, मैंने उन्हीं मित्रों के साथ ज़्यादा तेज़ पदार्थों का प्रयोग शुरू कर दिया। अब मैं स्वयं को पूरी तरह से लत की गिरफ्त में पाता हूँ, और मेरा पूरा जीवन एक प्रश्नचिह्न बन गया है। मैं नौकरी नहीं कर सकता। मेरे अपने परिवार ने मुझे दूर कर दिया है क्योंकि मैं और मेरे मित्र नशे की हालत में झगड़ों, दुर्घटनाओं और यहाँ तक कि पुलिस केसों में भी फँसे रहे हैं। मेरी बहन के शादी के प्रस्ताव ठुकरा दिए गए हैं क्योंकि लोग पूछते हैं, "जब उसका भाई ऐसे रहता है तो हम अपनी बेटी की शादी इस परिवार में कैसे कर सकते हैं?" मेरी एक छोटी बहन भी है, और हमारा पूरा घर बिखर रहा है। मैं इस लत से बाहर आना चाहता हूँ, लेकिन मेरे मित्र मुझे इसमें बने रहने के लिए मजबूर करते हैं। मैं सचमुच बदलना चाहता हूँ, लेकिन मैं स्वयं को लाचार महसूस करता हूँ। मुझे क्या करना चाहिए?

— माइकल, अवदी

प्रिय माइकल,

मैं आपकी स्थिति समझता हूँ। एक तरफ, आप तकलीफ में हैं क्योंकि आप इस लत में फँसे हुए महसूस करते हैं। दूसरी ओर, आप अपराधबोध से ग्रस्त हैं क्योंकि इसका असर आपके परिवार, खासकर आपकी बहनों के भविष्य पर पड़ रहा है। मित्रों के साथ एक सामान्य आदत के रूप में शुरू हुई यह आदत अब एक विनाशकारी बंधन में बदल गई है।

लेकिन यह बात साफ़ तौर पर समझ लीजिए: कोई भी पापमय आदत छोड़ना नामुमकिन नहीं है। आपको पहले यह पक्का यकीन होना चाहिए कि आप इससे बाहर आ सकते हैं।

यह भी समझ लीजिए—एक सच्चा मित्र वह होता है जो आपको गलत रास्ते से हटा दे, न कि वह जो आपको उसमें धकेले।

जो भी आपको पाप करने के लिए मजबूर करता है, वह आपका मित्र नहीं है। ऐसे लोग आपकी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते; वे उन्हें और गहरा ही करेंगे।

आज़ादी की चाहत अच्छी है, लेकिन सिर्फ़ चाहत ही काफ़ी नहीं है। आपको दृढ़ संकल्प, अनुशासन और लगन की ज़रूरत है।

अगर आप साथियों के दबाव में ऐसा करते रहेंगे...

- आप काम करने में असमर्थ रहेंगे, और आपका भविष्य और भी डूबता चला जायेगा।
- यह लत आपको अंततः जेल और सार्वजनिक अपमान की ओर ले जा सकती है।

- आपकी पारिवारिक स्थिति बिगड़ सकती है; आपके और आपकी बहनों के बीच कड़वाहट बढ़ सकती है।
- आपकी बड़ी बहन की तरह, आपकी छोटी बहन का भविष्य भी प्रभावित हो सकता है।
- आपका स्वास्थ्य बिगड़ेगा और निराशा आपको खतरनाक फैसले लेने पर मजबूर कर सकती है।

अगर आप अपने मित्रों के दबाव के बावजूद स्वयं को आज़ाद कर लेते हैं...

- आपका जीवन, जो अभी एक प्रश्नचिह्न सा लगता है, एक नई दिशा लेगा।
- जैसे-जैसे आप कमाई शुरू करेंगे और एक स्थिर भविष्य का निर्माण करेंगे, आपको फिर से सम्मान और गरिमा मिलेगी।
- आपकी बहन की शादी की संभावनाएँ बढ़ेंगी और आपका परिवार सुधरने लगेगा।
- हालाँकि आप अपने मित्रों का समर्थन खो सकते हैं, लेकिन आपको अपने परिवार का प्यार मिलेगा।
- अपराधबोध की जगह शांति और खुशी आएगी।

इस बंधन को तोड़ने के उपाय:

- ज़हरीली मित्रता से पूरी तरह नाता तोड़ लें। हर उस संपर्क को ब्लॉक करें जो इस लत को बढ़ावा देता है।
- अकेलेपन से बचें। अकेलेपन के क्षणों में लतें और भी गहरी हो जाती हैं। स्वयं को स्वस्थ प्रभावों से घिरा रखें।
- घर बदलने पर विचार करें। कभी-कभी जगह बदलने से एक नई शुरुआत हो सकती है।
- अंधकार को प्रकाश से बदलें। केवल यह न सोचें कि "मुझे नशा छोड़ना ही होगा।" इसके बजाय, अपने मन को पुनः निर्देशित करने के लिए खेलकूद, पारिवारिक गतिविधियों या रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न हों।
- यीशु मसीह की ओर मुड़ें। वह आपके पापों को क्षमा करने, आपको इस बंधन से मुक्त करने और आपको अपनी संतान के रूप में अपनाने के लिए तैयार हैं। शास्त्र कहता है, "जो अपने पाप छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उन्हें मान लेता और त्याग देता है, उस पर दया होती है" (नीतिवचन 28:13)। अपने पापों को स्वीकार करें, उनकी कृपा प्राप्त करें, और एक नया जीवन शुरू करें!

अंधकार चिल्लाने से नहीं जाता - यह तब जाता है जब आप प्रकाश को अंदर आने देते हैं। माइकल, स्वतंत्रता संभव है। समझौते के बजाय साहस, अंधकार के बजाय प्रकाश चुनें, और आपका जीवन - और आपके परिवार का भविष्य बदल जाएगा।

प्रज्वलित रहें

गुनगुना खतरनाक है

आज, कई युवा, जिन्हें प्रभु के लिए चमकने के लिए बुलाया गया है, गुनगुनेपन में जी रहे हैं—न तो तपते हुए, न ही ताज़गी भरे ठंडे। लेकिन याद रखें: मसीह ने अपना बहुमूल्य लहू इसलिए नहीं बहाया कि हम जीवन में यूँ ही भटकते रहें। उनका बलिदान आधे-अधूरे मन से, संसार और उनके बीच बँटे हुए जीवन के लिए नहीं था।

"यीशु तुम्हें सुख देने के लिए नहीं मरा। वह मरा की तुम्हें समर्पित कर सके।"

चुनें कि तुम किसकी सेवा करोगे

यहोशू ने एक बार इस्राएल के लोगों को चुनौती दी थी: **"यदि प्रभु की सेवा करना तुम्हें अप्रिय लगे, तो आज ही चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे... परन्तु मैं और मेरा घराना प्रभु की सेवा करेंगे"** (यहोशू 24:15)।

हालाँकि इस्राएल परमेश्वर का चुना हुआ राष्ट्र था, फिर भी वे अक्सर दूसरे देवताओं के पीछे भटक जाते थे। यहोशू ने पवित्र उत्साह के साथ उठकर उन्हें फिर से वफ़ादारी की ओर बुलाया। आज, वही चुनौती हमारे सामने है—आप दोहरा जीवन नहीं जी सकते। या तो यीशु के लिए जलो या समझौता करके फीके पड़ जाओ। "तुम एक ही समय में मसीह से लिपटे नहीं रह सकते और संसार को गले नहीं लगा सकते।"

दुनिया अंधकार में क्यों ठोकर खाती है

अगर आज परमेश्वर के बच्चे यहोशू की तरह प्रज्वलित होते, तो भारत स्वयं मसीह के प्रकाश से भर चुका होता। फिर भी कई युवा हिचकिचाते हैं—संसार को छोड़ने में असमर्थ, फिर भी यीशु को छोड़ने को तैयार नहीं। अंततः, वे किसी के लिए भी नहीं चमकते।

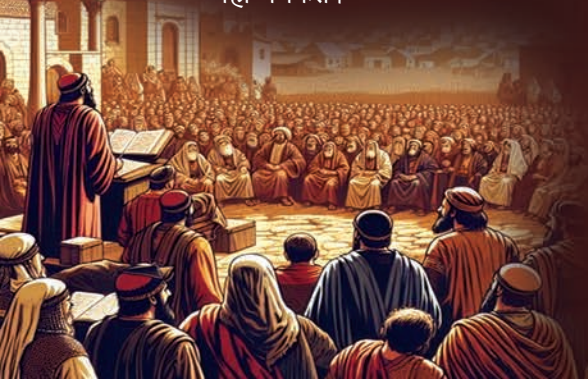

इतिहास हमें सिखाता है: जब भी इस्राएल के पास ईश्वरीय नेता थे, उन्होंने पूरे मन से प्रभु का अनुसरण किया। लेकिन जब नेतृत्व विफल हुआ, तो वे उसके चमत्कारों और उसकी दया को भूलकर उससे दूर हो गए। उदासीन जीवन ने उन्हें प्रतिज्ञात देश से बाहर रखा। लेकिन यहोशू, आग से जलता हुआ, कनान में प्रवेश कर गया।

कोई दो स्वामी नहीं

यीशु स्पष्ट थे: "कोई भी दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता" (मत्ती 6:24)। संसार और उसकी इच्छाएँ एक दिन लुप्त हो जाएँगी, साथ ही उनका पीछा करने वाले सभी लोग भी।

शिमशोन को परमेश्वर के लिए प्रज्वलित होने के लिए बुलाया गया था, लेकिन सांसारिक सुखों को जगह देकर, उसने अपनी ताकत और अपनी दृष्टि दोनों खो दीं। आज की पीढ़ी पर भी यही ख़तरा मंडरा रहा है—कई युवा अपनी इच्छाशक्ति खो देते हैं जब वे अपनी वासना को सुख-सुविधाओं में बदल देते हैं। "गुनगुना जीवन व्यर्थ जीवन है।"

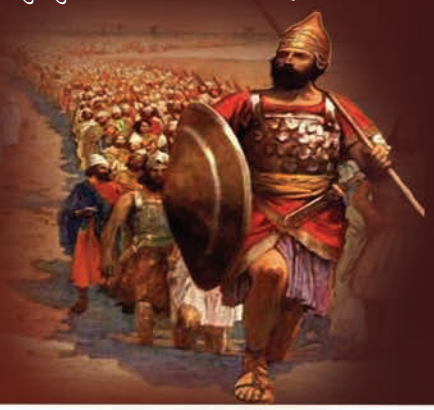

अंतिम दिनों का आह्वान

मेरे प्रिय युवा मित्रों, ये अंतिम दिन हैं! परमेश्वर आपके माध्यम से महान कार्य संपन्न करना चाहता है। लेकिन अगर आप गुनगुने ही रहेंगे, तो आप बेकार रहेंगे—न तो परमेश्वर के लिए और न ही संसार के लिए। प्रभु चेतावनी देते हैं: "क्योंकि तू गुनगुना है, और न ठंडा है और न गर्म, इसलिए मैं तुझे अपने मुँह से उगल दूँगा।" (प्रकाशितवाक्य 3:16)। इसलिए, इस क्षणिक संसार से नहीं, बल्कि शाश्वत परमेश्वर से जुड़े रहो। उसके लिए प्रज्वलित रहो!

पवित्र जीवन जियो। जोश से जियो। जलते हुए जीवन जियो। तभी तुम इस अँधेरी दुनिया में मसीह के लिए चमकते रहोगे।

विश्व जागृति प्रार्थना भवन

Our Branches

Mumbai (Dharavi)
World Revival Prayer Canter, T/1, Block No.11,
90 Feet Road, Rajiv Gandhi Nagar Dharavi, Mumbai - 400 017
Email: br.dharavi@jesusredeems.org, Ph: +91 8082410410

Mumbai (Malad)
World Revival Prayer Center, Bethel, Plot 305/E,
Mith Chowky Marve Road, Malad(w) Mumbai - 400064
Ph: +91 9664050567

Ranchi
World Revival Prayer Centre, Kadru Sarna Toli,
Near Argora Railway Station, Road no -1, Doranda P.O
Ranchi - 834 002, Jharkand,
Email: br.ranchi@jesusredeems.org, Ph: 9523336010

Chandigarh
World Revival Prayer Centre, SCO 1st Floor, Dhakoli-Kalka Road,
NH-22, Near City Court Zirakpur, Punjab- 160104
Email: br.chandigarh@jesusredeems.org, Ph: 9417726492

Delhi
World Revival Prayer Centre, Plot no 152, Ground floor,
Pratap nagar,opposite harinagar bus depot, New Delhi - 110064
Email: br.delhi@jesusredeems.org, Ph: 011-25616253 / 35580428

Come and Pray

मैं एक प्रार्थना योद्धा हूँ!

कैसे अडिग प्रार्थना ने दानिय्येल की परीक्षाओं को विजय में बदल दिया।

प्रार्थना जो कभी नहीं रुकती। विश्वास और आशा में निहित प्रार्थना। यही **दृढ़ प्रार्थना** है। बाइबल हमें ऐसे कई लोगों से परिचित कराती है जिन्होंने अनोखे तरीके से प्रार्थना की—और हर एक की एक सफलता की कहानी है। पिछले महीने, हमने इस बात पर विचार किया कि कैसे कलीसिया की उत्कट प्रार्थना ने पतरस को जेल से रिहा कराया। इस महीने, आइए जानें कि कैसे **दानिय्येल के दृढ़ प्रार्थना जीवन ने असंभव परिस्थितियों को शानदार विजय में बदल दिया।**

दानिय्येल का अडिग प्रार्थना जीवन

- **निरंतर भक्ति:** जब राजा दारा ने स्वयं के अलावा किसी अन्य देवता से प्रार्थना करने पर प्रतिबंध लगा दिया, तब भी दानिय्येल हमेशा की तरह दिन में तीन बार घुटने टेककर प्रार्थना करता था (दानिय्येल 6:10) । उसकी प्रतिबद्धता किसी भी शाही आदेश से ज़्यादा ज़ोरदार थी।

- स्पष्ट पारदर्शिता: दानिय्येल अपनी खिड़कियाँ यरूशलेम की ओर करके खुलेआम प्रार्थना करता था (दानिय्येल 6:10), जिससे पता चलता है कि उसे अपनी भक्ति के बारे में कुछ भी छिपाने की ज़रूरत नहीं थी।

- निडर विश्वास: शेरों की मांद में फेंक दिए जाने पर भी, दानिय्येल ने प्रार्थना करना नहीं छोड़ा। परमेश्वर में उसका विश्वास अटल रहा (दानिय्येल 6:23) ।

दानिय्येल हमें सिखाता है कि प्रार्थना संकट के समय में कोई आपातकालीन उपाय नहीं है - यह एक जीवनशैली है।

अटल निष्ठा

दानिय्येल की चुनौतियाँ केवल प्रार्थना से संबंधित नहीं थीं - वे चरित्र से संबंधित थीं।

- उसने शाही भोजन और मदिरा से स्वयं को अशुद्ध करने से इनकार कर दिया, और विशेषाधिकार के बजाय पवित्रता को चुना (दानिय्येल 1:8-17) ।

- वह सत्य के पक्ष में तब भी खड़ा रहा जब इसकी कीमत चुकानी पड़ी।

- वह और उसके मित्र, धर्म के अनुरूप ढलने के दबाव के बावजूद, परमेश्वर के प्रति वफ़ादार रहे, तब भी जब उनके इब्रानी नामों को मूर्तिपूजक नामों से बदल दिया गया।

- परमेश्वर के प्रति दानिय्येल के अटल हृदय ने उसे एक विदेशी भूमि में भी अलग खड़ा किया - और स्वर्ग ने इसके लिए उसे सम्मानित किया।

शेरों की मांद में विजय

▸ दानिय्येल के विश्वास ने शेरों की दहाड़ को शांत कर दिया। जिस राजा ने उसके मृत्यु-पत्र पर हस्ताक्षर किए थे, उसी ने गवाही दी:

"जिस परमेश्वर की तू निरंतर सेवा करता है, वही तुझे छुड़ाने में समर्थ है!" (दानिय्येल 6:16)

▸ और उसने ऐसा किया भी। दानिय्येल सुरक्षित बच निकला, जिससे यह सिद्ध हुआ कि परमेश्वर उन लोगों को बचाता है जो उस पर भरोसा करते हैं। परिणामस्वरूप, राजा दारा ने सार्वजनिक रूप से परमेश्वर की महिमा की: "वह जीवित परमेश्वर है... वह बचाता और उद्धार करता है... वह स्वर्ग और पृथ्वी पर चिह्न और चमत्कार करता है।" (दानिय्येल 6:26-27)

▸ दानिय्येल की दृढ़ प्रार्थना और विश्वास ने खतरे को शक्ति के दिव्य प्रदर्शन में बदल दिया।

बंधुआ से अगुआ तक

दानिय्येल एक बंदी युवक के रूप में बाबुल में प्रवेश किया - लेकिन परमेश्वर ने उसे शक्ति और प्रभाव के पदों पर पहुँचाया। राजा के स्वप्न की व्याख्या न कर पाने के कारण मृत्युदंड की धमकी मिलने पर भी, परमेश्वर ने दानिय्येल को बुद्धि और

विजय प्रदान की। निष्ठा से पदोन्नति हुई, और प्रार्थना ने सम्मान का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रार्थना योद्धा बनने की आपकी बारी !

प्रिय युवा मित्र, यदि परमेश्वर आपके साथ है, तो कोई भी परिस्थिति आपको पराजित नहीं कर सकती। दानिय्येल की तरह, प्रार्थना में दृढ़ रहो, विश्वास में दृढ़ रहो, और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन पर भरोसा रखो। जब आप पवित्र साहस के साथ जीवन जीते हैं, तो आपके संघर्ष सफलता में बदल जाएँगे, और आपका जीवन परमेश्वर की महिमा करेगा।

Revival IGNITERS

इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश।आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो,और दूसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार

Mumbai – Dharavi
Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार

THANE
Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार

Mumbai-Malad
Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

सनसनीख़ेज़ ख़बर

जब विश्वास प्रकृति को आज्ञा देता है! हेलो मित्रों! आप सब कैसे हैं? इस महीने सनसनीखेज़ खबर के ज़रिए आपसे फिर मिलकर मुझे बहुत खुशी हो रही है! प्राचीन और आधुनिक, दोनों ही सच्ची घटनाओं से रूबरू होने के लिए तैयार हो जाइए, जो दिखाती हैं कि कैसे परमेश्वर आज भी प्रकृति को आज्ञा देता है।

बाइबल के अजेय चमत्कार

बाइबल में ऐसे पल दर्ज हैं जब विश्वास ने प्रकृति के नियमों को ही हिलाकर रख दिया। यहोशू ने प्रार्थना की, और सूर्य गिबोन के ऊपर स्थिर हो गया, जबकि चंद्रमा अय्यालोन के ऊपर, इस्राएल की आँखों के सामने रुक गया। एलिय्याह ने स्वर्ग से आग बरसाई, जिससे भीड़ को यह साबित हो गया कि केवल प्रभु ही परमेश्वर है। यीशु ने प्रचंड हवाओं और हिंसक लहरों से बात की, उन्हें शांत रहने का आदेश दिया—और उन्होंने आज्ञा मानी।

इन चमत्कारों ने विज्ञान को चुनौती दी, प्राकृतिक व्यवस्था को उलट दिया, और पूरी भीड़ को परमेश्वर की ओर वापस मोड़ दिया।

थोमा: संदेह से साहसी विश्वास तक

यहाँ तक कि थोमा—जिसे अक्सर "संदेह करने वाला थोमा" उपनाम दिया जाता है—ने भी अटूट विश्वास के ज़रिए एक अद्भुत चमत्कार किया।

एक दिन केरल के पलायुर में एक मंदिर के तालाब के पास, उन्होंने लोगों को अपने पूर्वजों के लिए अनुष्ठान करते देखा। वे अपने हाथों से पानी भरकर आकाश की ओर फेंक रहे थे, यह प्रार्थना करते हुए कि यह किसी तरह उन लोगों तक पहुँच जाए जो अब इस दुनिया में नहीं रहे।

थोमा ने उन्हें चुनौती दी: "तुम जो पानी फेंकते हो वह बार-बार नीचे क्यों गिरता है? अगर तुम्हारा ईश्वर सचमुच तुम्हारी सुनता है, तो वह तुम्हारा चढ़ावा स्वीकार क्यों नहीं करता? लेकिन जिस परमेश्वर की मैं सेवा करता हूँ, वह न केवल मेरी प्रार्थना सुनता है—वह तुम्हें एक संकेत भी देगा। वह इस पानी को हवा में ही रहने देगा!"

उसने स्वर्ग की ओर देखा, यीशु मसीह से प्रार्थना की, तालाब में उतरा, और विश्वास के साथ पानी ऊपर की ओर फेंका। सभी को आश्चर्य हुआ कि पानी हवा में ऐसे लटक रहा था जैसे समय में जमे हुए फूल हों। यहाँ तक कि जिस जगह से उसने पानी भरा था, वहाँ तालाब में एक छोटा सा गड्ढा बन गया था, मानो प्रकृति ने स्वयं इस चमत्कार को स्वीकार कर लिया हो।

यह घटना पूरे शहर में जंगल की आग की तरह फैल गई। लोग इसे अपनी आँखों से देखने के लिए दौड़ पड़े। इस चमत्कार से आश्वस्त होकर, लगभग 1,050 लोगों ने यीशु मसीह को स्वीकार किया और

बपतिस्मा लिया। इस चमत्कार का स्थल आज भी केरल के पलायुर में मौजूद है—जो इस बात का जीवंत साक्षी है कि दृढ़ विश्वास क्या कर सकता है।

आधुनिक समय: कन्याकुमारी रेड अलर्ट चमत्कार

आप सोच रहे होंगे—क्या आज भी ऐसे चमत्कार हो सकते हैं? यहाँ इसका प्रमाण है।

कुछ साल पहले, कन्याकुमारी ज़िले में एक विशाल प्रार्थना सभा की योजना बनाई गई थी, जिसमें परमेश्वर के एक जाने-माने सेवक को वचन सुनाना था। तैयारियाँ महीनों पहले से शुरू हो गई थीं। लेकिन आयोजन से ठीक दो दिन पहले, कन्याकुमारी सहित तमिलनाडु के कई ज़िलों में मूसलाधार बारिश हुई। रेड अलर्ट जारी कर दिया गया—हर जगह बाढ़ का ख़तरा, ख़तरा।

संकट के बावजूद, पूरे तमिलनाडु में विश्वासियों ने सच्चे मन से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। परमेश्वर के उस जन ने भी प्रभु से प्रार्थना की, जिन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, "उस ज़िले में जाओ—मैं आऊँगा और वहाँ महान चमत्कार करूँगा।"

इस आश्वासन के साथ, वह आगे बढ़े। आश्चर्यजनक रूप से, तीन दिवसीय सभा बिना किसी व्यवधान के संपन्न हुई। जहाँ पूरा क्षेत्र आपदा का इंतज़ार कर रहा था, कन्याकुमारी में रेड अलर्ट अचानक हटा लिया गया। ख़तरा टल गया। और बस इतना ही नहीं—प्रार्थना सभा के दौरान, परमेश्वर ने अलौकिक चिन्ह और चमत्कार दिखाए, जिससे अनगिनत जीवन बदल गए। यह एक सामर्थी प्रमाण था कि विश्वास से भरी प्रार्थना प्रकृति को भी परमेश्वर के अधीन कर सकती है।

चमत्कारों के बारे में सिर्फ़ सुनने से कहीं बढ़कर आह्वान

वाह—क्या ये चमत्कार वाकई अद्भुत नहीं हैं? लेकिन ये सिर्फ़ सुनने और प्रशंसा करने की कहानियाँ नहीं हैं। परमेश्वर ने हमें सिर्फ़ ऐसे चमत्कारों को सुनने के लिए नहीं चुना है—उसने हमें उन्हें जीने के लिए बुलाया है। इसीलिए उसने हमें अनमोल विश्वास दिया है। लेकिन सवाल यह है:

क्या हम इसमें बढ़ रहे हैं? आज हमारा विश्वास कितना मज़बूत है?

सिर्फ़ विश्वास से काम नहीं चलेगा। ये चट्टान की तरह मज़बूत, अटूट विश्वास के फल हैं—एक ऐसा विश्वास जो एक अनमोल प्रार्थना जीवन और परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए जाने की अदम्य इच्छा से और भी निखरता है। केवल दृढ़, अटल विश्वास और त्यागपूर्ण प्रार्थना ही ऐसे महान कार्यों का द्वार खोलेंगे। तो आइए प्रार्थना करें। आइए कार्य करें। आइए, प्रभु के लिए असंभव कार्य करने की लालसा के साथ उठ खड़े हों। दुनिया यह देखने के लिए उत्सुक है कि जब विश्वास की ताकत प्रबल होगी तो क्या होगा!

(समाचार जारी है...)

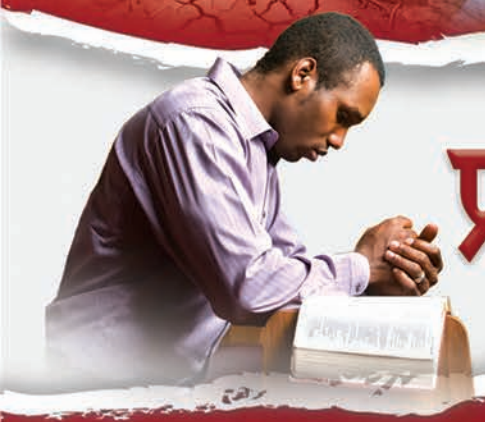

प्रार्थना मार्गदर्शिका

अक्टूबर 2025

1 वैश्विक आर्थिक संकट के समाधान के लिए प्रार्थना करें, जिसने—संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार—पिछले वर्ष 78.3 करोड़ लोगों को भूख से पीड़ित कर दिया था।

2 दुनिया भर में उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो पर्याप्त भोजन के बिना भूख से मर रहे हैं।

3 प्रार्थना करें कि भोजन और आश्रय से वंचित 78.3 करोड़ लोगों को प्रावधान प्राप्त हो।

4 उन 14.8 करोड़ बच्चों का उत्थान करें जिनका विकास कुपोषण के कारण अवरुद्ध है, और परमेश्वर से उन्हें पौष्टिक भोजन प्रदान करने की प्रार्थना करें।

5 पश्चिम एशिया, कैरिबियन और अफ्रीका के उन देशों के लिए प्रार्थना करें जहाँ आर्थिक गिरावट के कारण लोग न्यूनतम भोजन भी नहीं जुटा पा रहे हैं।

6 रूस और यूक्रेन के बीच शांति के लिए प्रार्थना करें, क्योंकि चल रहे युद्ध ने खाद्य और अनाज की आपूर्ति श्रृंखलाओं को बुरी तरह बाधित कर दिया है, जिससे कमी हो रही है।

7 परमेश्वर से जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं और खराब मौसम से प्रभावित सूखाग्रस्त और अकालग्रस्त देशों में समृद्धि लाने की प्रार्थना करें।

8 भोजन की बर्बादी के विरुद्ध प्रार्थना करें, क्योंकि वैश्विक खाद्य उत्पादन का एक-तिहाई (1.3 अरब टन) प्रतिवर्ष नष्ट हो जाता है।

9 विकासशील देशों में उचित भंडारण सुविधाओं की स्थापना के लिए प्रार्थना करें ताकि गोदामों की कमी के कारण लाखों टन भोजन बर्बाद होने से बचाया जा सके।

10 उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो लापरवाही से भोजन बर्बाद करते हैं—ताकि उनका हृदय परिवर्तित हो और वे इसे ज़रूरतमंदों के साथ बाँट सकें।

11 स्मार्टफोन के आदी कॉलेज के छात्रों—जिनमें से कुछ दिन में 10 घंटे तक स्मार्टफोन का उपयोग करते हैं—के लिए प्रार्थना करें ताकि वे इससे मुक्त हो सकें और अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

12 प्रतिदिन 3 घंटे से अधिक स्मार्टफोन का उपयोग करने के कारण पीठ दर्द और स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर रहे युवाओं के लिए प्रार्थना करें, और उपचार और अनुशासन की प्रार्थना करें।

13 उन किशोरों के लिए प्रार्थना करें जिनका मन वीडियो गेम की लत से प्रभावित हो गया है, और उनका भविष्य परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

14 अत्यधिक स्मार्टफोन उपयोग के कारण कम उम्र में दृष्टि संबंधी समस्याओं का विकास करने वाले बच्चों के लिए प्रार्थना करें, और परमेश्वर से उनकी दृष्टि बहाल करने की प्रार्थना करें।

15 फ़ोन के अत्यधिक उपयोग से वक्षीय रीढ़ की हड्डी में दर्द से पीड़ित 14-18 वर्ष की आयु के 38% किशोरों के लिए प्रार्थना करें और उनसे पश्चाताप और मुक्ति की प्रार्थना करें।

16 प्रार्थना करें कि सरकारें स्कूलों और कॉलेजों में स्मार्टफ़ोन की लत के खतरों के बारे में जागरूकता कार्यक्रम चलाएँ।

17 भारत के लिए प्रार्थना करें, जहाँ प्रतिदिन 80 हत्या के मामले दर्ज होते हैं—परमेश्वर से हिंसा और रक्तपात की भावनाओं को नियंत्रित करने के लिए प्रार्थना करें।

18 एक ही वर्ष में दर्ज की गई 29,193 हत्याओं के विरुद्ध प्रार्थना करें, जो विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में हुई हैं, और परमेश्वर से इन अपराधों को रोकने के लिए प्रार्थना करें।

19 परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वे उद्धारक सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से हिंसा और हत्या को कम करें, जिससे सामाजिक परिवर्तन हो।

20 युवाओं में हत्याओं और आत्महत्याओं में खतरनाक वृद्धि के विषय में प्रार्थना करें: • 38.5% मामले 30-45 वर्ष की आयु के लोगों से संबंधित हैं, • 35.9% मामले 18-30 वर्ष की आयु के लोगों से संबंधित हैं, • 25.6% मामले 45 वर्ष से अधिक आयु के लोगों से संबंधित हैं। परमेश्वर से युवा जीवन को विनाश से बचाने के लिए प्रार्थना करें।

21 हृदय से प्रार्थना करें कि युवा लोग हिंसा के माध्यम से एक-दूसरे को या स्वयं को नष्ट न करें।

22 हमारे देश में हत्या और रक्तपात को भड़काने वाली दुष्ट आत्माओं के विनाश के लिए मध्यस्थता करें।

23 प्रार्थना करें कि सूखा समाप्त हो, बारिश हो, कृषि भूमि धन्य हो, और किसान जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होने में बुद्धिमानी से कार्य करें।

24 परमेश्वर से अत्यधिक गर्मी और सूखे के कारण होने वाली कमजोरी, थकावट, मानसिक तनाव और अनिद्रा को दूर करने के लिए प्रार्थना करें।

25 युद्धों, आतंकवाद और विद्रोहों के अंत के लिए प्रार्थना करें, और परमेश्वर से राष्ट्रों के बीच शांति स्थापित करने के लिए प्रार्थना करें।

26 भारत के लिए मध्यस्थता करें, जहाँ दहेज उत्पीड़न के कारण हर घंटे एक महिला की मृत्यु होती है—इस बुराई के पूर्णतः उन्मूलन के लिए प्रार्थना करें।

27 2012 में दर्ज किए गए 8,233 दहेज-संबंधी मामलों (एनसीआरबी के अनुसार) के विरुद्ध प्रार्थना करें, और इस अपराध को भड़काने वाली आत्माओं को शांत करने के लिए प्रार्थना करें।

28 परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह दहेज-संबंधी हत्याओं में हर 90 मिनट में महिलाओं को जलाए जाने की घटनाओं को रोकें—जो औसतन हर दिन 20 मौतें होती हैं।

29 भारत में प्रतिवर्ष दर्ज होने वाले 6,000 से अधिक दहेज मामलों के न्याय और शीघ्र समाधान के लिए प्रार्थना करें।

30 आइए हम प्रार्थना करें कि सुसमाचार कलीसियाओं में तेज़ी से फैले और परमेश्वर की शक्ति प्रकट हो।

31 आइए हम प्रार्थना करें कि कलीसियाओं में जागृति आए, प्रभु के नाम की महिमा हो, और सभी लोग पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हों।

पुनरुत्थान के बीज

पिछले महीने, हमने जॉन थॉमस के जीवन पर विचार किया, जिन्होंने ज़मीन पर गिरे गेहूँ के दाने की तरह, मेगननपुरम और उसके आसपास के 125 गाँवों में 33 वर्षों तक अथक परिश्रम किया—सुसमाचार का प्रचार किया, 54 स्कूल और कई चर्च बनवाए, और कड़े विरोध और व्यक्तिगत क्षति के बावजूद अनगिनत आत्माओं को मसीह के लिए जीता। इस महीने, आइए हम परमेश्वर के एक और उल्लेखनीय सेवक—एक मिशनरी—की ओर ध्यान आकर्षित करें, जिसने प्राचीन कालेब की तरह प्रार्थना की: "यह पहाड़ मुझे दे दो" (यहोशू 14:12)। उसी भावना से, उसने विनती की, "हे प्रभु, मुझे पृथ्वी के सबसे कठिन मिशन क्षेत्र में भेजो। वहाँ मैं आपकी सेवा करूँगा।" वह मिशनरी रॉबर्ट मॉरिसन थे, जो चीन में सुसमाचार का प्रकाश फैलाने वाले अग्रणी थे।

रॉबर्ट मॉरिसन: चीन के लिए पथ-प्रदर्शक

प्रारंभिक जीवन

रॉबर्ट मॉरिसन का जन्म **1782 में इंग्लैंड** में अपने परिवार में आठवें बच्चे के रूप में हुआ था। छोटी उम्र से ही, उन्होंने लकड़ी पर नक्काशी करने वाले एक कारखाने में अपने पिता की सहायता की। अपने धर्मनिष्ठ पिता के प्रभाव से, रॉबर्ट अपना खाली समय बाइबल पढ़ने में बिताते थे। जहाँ ज़्यादातर लड़के खेलकूद पसंद करते थे, वहीं रॉबर्ट ने अपना समय अपने पासवान के मार्गदर्शन में शास्त्रों का अध्ययन करने में लगाया। 14 साल की उम्र में, उन्होंने अपने पिता के पेशे में प्रशिक्षण लेने के लिए स्कूल छोड़ दिया।

परमेश्वर की बुलाहट

मात्र 15 साल की आयु में, रॉबर्ट ने एक गहरा परिवर्तन अनुभव किया और मसीह के साथ अपने सफ़र में दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ने लगे। मिशनरी पत्रिकाएँ पढ़ने से उनके मन में उन विदेशी देशों के लिए एक बोझ उमड़ पड़ा, जिन्होंने यीशु के बारे में कभी नहीं सुना था। वह स्वयं एक मिशनरी के रूप में वहाँ जाने के लिए उत्सुक थे।

फिर भी उनकी माँ ने इस विचार का कड़ा विरोध किया और कहा कि जब तक वह जीवित हैं, रॉबर्ट को कभी घर नहीं छोड़ना चाहिए। लेकिन रॉबर्ट प्रार्थना करते रहे। 1802 में जब उनकी माँ का निधन हो गया, तो उन्होंने दो साल के लिए लंदन में मिशनरी प्रशिक्षण लिया और जल्द ही लंदन मिशनरी सोसाइटी ने उन्हें स्वीकार कर लिया।

हालाँकि इंग्लैंड में सेवा के अवसर प्रचुर मात्रा में थे, रॉबर्ट का हृदय चीन के लिए तरस रहा था।

चीन की यात्रा

1807 में, कोई साथी मज़दूर उपलब्ध न होने के कारण, सोसाइटी ने रॉबर्ट को अकेले चीन भेजने का फैसला किया। ईस्ट इंडिया कंपनी ने उन्हें वहाँ यात्रा करने या बसने की अनुमति नहीं दी। दृढ़ निश्चयी, रॉबर्ट पहले अमेरिका गए, सिफ़ारिश पत्र प्राप्त किए, और फिर कैंटन

(अब ग्वांगझू) जाने वाले एक अमेरिकी जहाज़ पर सवार हुए। सात महीने की समुद्री यात्रा के बाद, वे सितंबर 1807 में वहाँ पहुँचे।

हर मोड़ पर उन्हें संदेह और शत्रुता का सामना करना पड़ा। खुलेआम सुसमाचार का प्रचार करना मना था। चीनी भाषा सीखना ही ख़तरनाक माना जाता था। उनके शुरुआती शिक्षकों ने तो उन्हें चेतावनी भी दी थी: "अगर अधिकारियों को पता चला कि हम तुम्हें पढ़ा रहे हैं, तो हमें यातना दी जाएगी। हम पकड़े जाने से पहले अपनी जान लेने के लिए ज़हर तैयार रखते हैं।"

फिर भी, रॉबर्ट डटे रहे। 18 महीनों के भीतर, उन्होंने पहला चीनी शब्दकोश तैयार कर लिया। ईस्ट इंडिया कंपनी ने उनके कौशल से प्रभावित होकर, उन्हें वेतन सहित अनुवादक का पद देने की पेशकश की। लेकिन उनका असली मिशन इससे कहीं ज़्यादा बड़ा था।

परिक्षण और पारिवारिक दुःख

चीन में, रॉबर्ट ने एक अंग्रेज़ चिकित्सक की बेटी मैरी मॉर्टन से शादी की। लेकिन कठोर जलवायु ने जल्द ही उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर डाला। 1815 में, वह अपने दो बच्चों के साथ इंग्लैंड लौट आईं। 1821 में जब वह रॉबर्ट के पास वापस आईं, तो उनका स्वास्थ्य फिर बिगड़ गया और कुछ ही समय बाद उनका निधन हो गया। उनके बच्चों, रेबेका (9) और जॉन (7) को शिक्षा के लिए इंग्लैंड वापस भेज दिया गया। गहरे शोक में, रॉबर्ट ने अपने एकाकी समय पवित्रशास्त्र के अनुवाद में लगा दिए।

मिशन कार्य

1815 में, उन्होंने चीनी भाषा में नया नियम प्रकाशित किया। इस कार्य के कारण उन्हें ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकरी से हाथ धोना पड़ा। निडर होकर, उन्होंने आगे बढ़ना जारी रखा। 1824 में, वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद, रॉबर्ट ने पूरी बाइबल चीनी भाषा में पूरी की और प्रकाशित की—जो अपनी तरह की पहली थी।

इंग्लैंड की अपनी यात्रा के दौरान, उन्होंने युवा मिशनरियों को प्रशिक्षित किया और उन महिलाओं के लिए कक्षाएं संचालित कीं, जिन्हें चीन में सेवा करने के लिए बुलाया गया था। इनमें से कई महिलाओं ने बाद में उस विशाल भूमि में सुसमाचार का प्रचार किया।

1826 में, वे कैंटन लौट आए और ब्रिटेन और चीन के बीच अनुवाद और मध्यस्थता का काम जारी रखा। हालाँकि, इस बोझ ने उनके शरीर को कमज़ोर कर दिया। 1 अगस्त 1834 को, चीन में 25 वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद, रॉबर्ट मॉरिसन प्रभु के पास चले गए। उनके धर्मांतरित लोग कम थे, लेकिन उनके बाइबल अनुवाद ने चीन में सुसमाचार के प्रसार के लिए एक शाश्वत आधारशिला रखी।

हमारे लिए एक विरासत

प्रिय युवा मित्रों, रॉबर्ट मॉरिसन जैसे मिशनरियों ने परिवार, सुख-सुविधाओं और जीवन को भी मसीह के कार्य के आगे कुछ नहीं समझा। क्योंकि वे परमेश्वर के लिए जलते थे, इसलिए जो राष्ट्र कभी अंधकार में डूबे रहते थे, वे अब सुसमाचार के प्रकाश से चमक रहे हैं।

कोई रूझान नहीं मेरे दोस्त

हेलो मित्रों! इस 'ट्रेन्ड' लेख के माध्यम से आपसे एक बार फिर मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। धर्म-शास्त्र हमें याद दिलाता हैं कि हमें जीवन के कुछ क्षेत्रों में एक आदर्श स्थापित करना चाहिए। मेरा मानना है कि यह स्थान यह जाँचने के लिए एक जाँच बिंदु के रूप में कार्य करता है कि हमारे कार्य वास्तव में योग्य हैं या नहीं।

आज, कई युवाओं को अच्छे कार्य करने के लिए उत्सुक देखना उत्साहजनक है। विभिन्न सेवा मंचों और पहलों के माध्यम से, दूसरों की मदद करना एक बढ़ता हुआ चलन बन गया है। प्रेरित पौलुस ने युवा तीतुस को भी ऐसी ही सलाह दी थी: "हर बात में भलाई करके उनके लिए एक आदर्श स्थापित करो" (तीतुस 2:7)। तीतुस में इस प्रकार दूसरों की सेवा करने की विशेष कृपा थी।

कुछ युवा पूरे मन से भलाई करते हैं। दूसरों के लिए, भलाई करना एक बोझ जैसा लगता है। और फिर कुछ ऐसे भी हैं जो केवल अपनी ख्याति बढ़ाने के लिए अच्छे कार्यों में शामिल होते हैं।

उस युवक को याद करो जिसने यीशु से पूछा था, "मैंने सभी आज्ञाओं का पालन किया है—क्या मुझे अनन्त जीवन मिलेगा?" प्रभु ने उत्तर दिया, "यदि तुम स्वर्ग में धन चाहते हो, तो जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बेचकर गरीबों को दे दो।"

मेरे प्रिय युवा मित्रों, ज़रा गौर कीजिए कि आजकल क्या ट्रेन्ड में है—यह बिलकुल अलग है। लोग गरीबों को दान देते हैं, लेकिन सिर्फ़ एक तस्वीर लेने और उसे ऑनलाइन पोस्ट करने के लिए। वे सेवा संस्थाओं के ज़रिए दान करते हैं, लेकिन सिर्फ़ दुनिया को यह दिखाने के लिए कि वे कितने "महान" हैं। भलाई करना अब सिर्फ़ वाहवाही बटोरने का एक दिखावा बन गया है।

लेकिन बाइबल क्या कहती है? "भलाई करने में एक आदर्श बनो।" परमेश्वर की संतान के अच्छे काम दुनिया के अच्छे कामों से अलग होने चाहिए।

मदर टेरेसा के बारे में सोचिए, जिन्होंने जन्म से यूरोपीय होने के बावजूद भारत में रहने और सेवा करने का फैसला किया। मसीह के प्रेम से प्रेरित होकर, उन्होंने कुष्ठ रोगियों की देखभाल की—बिना किसी घृणा के, बिना किसी प्रतिफल की आशा के।

तो, मेरे प्रिय मित्रों, आइए हम प्रचार के लिए भलाई न करें। आइए हम मसीह के प्रेम को प्रकट करने के लिए भलाई करें। पवित्र-शास्त्र कहता है, "जो कुछ तुम्हारे भीतर है उसे दान करो, तो सब कुछ तुम्हारे लिए शुद्ध हो जाएगा" (लूका 11:41)। दूसरे शब्दों में, हमारा दान हमें उतना ही शुद्ध करता है जितना कि दूसरों को आशीष देता है।

आइए हम पूरे मन से सेवा के लिए आगे आएँ। प्रभु हमसे यही अपेक्षा करते हैं। वचन कहता है, "जो कंगालों पर दया करता है, वह प्रभु को उधार देता है।" जब यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए, तो वे भलाई और चंगाई के काम करते फिरे (प्रेरितों के काम 10:38)। जब हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते हैं, तो हम भी भलाई करने के लिए प्रेरित होंगे।

सच्चा आनंद लेने में नहीं, बल्कि देने में मिलता है। इस महीने, आइए इस 'ट्रेन्ड' को तोड़ें—

अच्छे काम पदोन्नति के लिए नहीं, बल्कि बदलाव के लिए होते हैं।

अगले महीने फिर मिलेंगे, मित्रों!!